

আশা সঙ্কলিত

1.398

I

ASHA ARCHIVES

ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय श्रीवसु
देवाय नमो नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो

ध्यायेत् ॥ यदि वा नृपि स
संघर्षी वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
नामं नमो नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो

५

दानं नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो

विद्यासंग्रामात्तुष्टीपुत्रागच्छात्तिपात्रमितादवीभविनीध्यानध्यायनीगवयसी
 पद्मध्वनीवपुष्पासनमासनी॥पुष्टवृषीमहातज्ञाहमवर्धुप्रताकवी॥विनामनिधवी
 दवीपुष्टपुष्टकध्वनीध्वनीरूढमात्रुताध्वन्यागवधनप्रियाध्वेध्वनिकमहा
 आटीदिव्याहवधनविरी॥मात्रुवीसर्ववृक्षानांयत्नध्वनध्वनी॥पुष्टमात्रावि
 नीदवीरावातावविवर्द्धनी॥वेध्वकीविनतावदीपिनीरुमवन्दनी॥हिंदिनी

२५

सर्वमात्रानां सफपातायकारुनी॥वाध्वनीवदमानावगुचवागुचवासिनी॥सर्व
 स्वमीविभालाकीवगुचवाविहविनी॥तथागतीमहावम्यावकीसिधर्मध्वनी
 कर्मध्वनीविद्याविधवालायमध्वनी॥वाध्वनीसर्वमात्रानांवाध्वंगदतसध्वनी॥
 ध्वन्यादिमृकिसंपन्नांनरुयाहयुतादिनी॥सर्वार्थसाधनीरुद्रास्त्रीवृषामिताविकृष्ट
 मा॥दधनीसर्वमार्गानांनरुमार्गप्रदर्शनी॥वागीध्वनीमहाकिंशोरगध्वनीध्वनी

४

[illegible]

न्नासुजानिस्मवाहवन्नाप्रयश्चादयवाक्यश्चयवान्प्रियदर्शनश्चाविपुक्कजि
 यकलसुश्रादयसुपजायत॥ ज्जकलसीधवंप्राफंयश्चात्ताफसूखावति॥
 ॥ भक्तिप्रतीकार्यवसंधानानामाक्षरुचभनकीवृद्धलपिर्नसमा
 पी॥ सुत ॥ ॥ ६८०३३ ॥ यश्चर्मा ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
समग्रं भगवत्कृतं ध्यात्वा
यावत्कालं यत्नं कृत्वा
हं स्मिन् सर्वं प्रपूजितं सर्वं
कर्म सर्वं सत्त्वात्मादनं कर्म सर्वं

वन्द्ये ॥ नमो भगवते वासुदेवाय
निष्कामं सर्वं भगवत्कृतं ध्यात्वा
तावत्कालं यत्नं कृत्वा
नाम कृतं सर्वं सत्त्वात्मादनं
विद्या कृतं सर्वं विद्यात्मादनं

तन कर्म सर्वं कर्म विध्यं सन कर्म पवन कर्म विद्यापन कर्म ॥ सर्वग्रह विद्या कृत कर्म ॥
सर्वरुता कर्म पवन कर्म ॥ सर्वविद्या मंत्र कर्म परायणं ॥ असिद्धानां सिद्ध कर्म ॥ सिद्धानां वां
धिरि विना सन कर्म ॥ सर्वकर्म पदं ॥ सर्वसत्त्वान्न वक्तुं ॥ भक्तिकं ॥ श्रद्धिकं ॥ सर्वसत्त्वानां
सुतन कर्म ॥ सर्वसत्त्वानां भावन कर्म ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वन्द्ये ॥ वन्द्ये ॥ वन्द्ये ॥
सिद्धिप्राप्त्याप्त्यर्थं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नवकाशं सर्वमावर्तय महावलक टव ननर म्रम मयुलमावर्तय ननि वक्र महा वि
 मल नम्र जिने कल २ टिटिटिटि पिंगल दह २ नक वक्ति निवध २ महावल वजांक मः
 कालाय स्वाहा ॥ ॐ नमो भवतु कयाय ॥ ॐ नमो भवतु कयाय महायक सनाय नय ॥ ३
 ॐ ह २ व २ क २ प २ व २ क २ ध २ व २ क २ धा २ व २ य २ व २ क २ दा २ व २ सी २ व २ क २ दि २ द २ व २ क
 सिंद २ क २ रु २ ॥ ॐ नमो भवतु कयाय महायक ॥ राय ॐ क नू २ नि व २ वं ध २ ह २

नम न क २ रु २ द द या प द द य म ल मं तु ॥ ॥ सर्वया पकयं कत्वा सर्व इः खविना
 स नं ॥ म ना हि २ सर्व मं ज्ञा नां सर्व श्री सम लं क न २ २ प म न दि या रु त्वा न द्या प्र य
 ह ना य म २ ल नि च पि वि न द्या श्र व न म श्र प नां स र वा ॥ का का पि य ऊ न ३ द्या क द व
 श्र उ प द्मा २ ना स्त्र यं स म र्था नां रु य द्या स न म व च भा य ह न क उ पी ज वा का दा दा व
 द्या ग हा ॥ पा प कं प म्भ म २ स प्र २ द्या का या स म्भु चि तं ॥ न च स स्त्रा न मु वी ना ए ॥ न

व्यं स्रु मरु मि ॥ गृह्य सु मरु दं स्रु गरी वं वृद्ध गम च वं ॥ प्र स न्न चि रु स्र म नी गृ चि
व लु व लं कृ ता ॥ न च स र्व व उ क्ता उ प स ग म स्र द नृ ग म न क्ता स्र य पु ग म म न स्र मं क
स र्व मा प्र ता ॥ नृ य २ ॥ व वि व र्क न प र्व स र्व पा पे वि म क्ति तै म क्षि स र्व प ड र्क लि
व ला क र वं ध ने क्ष व ज ग शि रु प ष्पे अ क वा मा य क कां च नं ॥ घ न रु च क र्क ना पि न
वि व स्र न वा सि तै ॥ न क विं ग ति वा वा द्वां नृ क्ष रु व ग नं क य नृ ॥ व क वि द्वा व

१०

मृ ता लि ष क र्म हा मृ डा मं उ प दे ॥ उं आ द व २ न्ना म् संधा व दी ॥ ग म ध य २ वि र्ग म ध य २
ग ग म स्व ता व वि शु क्क उ र्क ॥ व वि क्ता य प वि शु क्क ॥ स र्ग च व स्मि सं आ दि न स र्व न थ
ग मा व ला कि नि ष य्वा व मि ना य वि दू व मि ॥ स र्व न थ ग न मा उ द ग र्क मि प्र मि
स्मि न ॥ स र्व न थ ग न ह द या धि द्या ना धि स्मि न स्म हा ॥ उं मृ ड २ म हा मृ ड २ व क का य
स न प वि शु क्क स र्व क र्मा व व ग वि शु क्क पु नि नि व र्क ना य वि शु क्क स र्व न थ ग न स

मया नाधिष्ठाता धिष्ठित स्वाहा॥ उं मनि २ महा मति विम नि महा विम नि मति २
महा मति म मति सु मति न्था गत सग का ति य वि भु व्व वि स्फु रि क वि भु व्व उं ह
ह ऊ य ऊ या वि ऊ या स्म व २ स्फा व य २ सर्व वृ द्धा धि ष्ठा ना धि स्थि त स्वा हा ॥ उं गु व्व
व व्व २ व ऊ २ महा व ऊ थु व ऊ व ऊ ग र्ह ऊ य ग र्ह वि ऊ य ग र्ह व ऊ काला ग र्ह व ऊ १२
रु व व ऊ रु व सर्व ऊं रु व व जि नि व ऊ सं रु व रु म म ग बी रं सर्व सत्त्वाना की का य य

विशुद्धीरुवकु मम सर्वसत्त्वानां च सर्वगतिरुद्धं सर्वकथागतहृदयाधिष्ठितं
सर्वकथागतां समासासयन् ॥ ॐ देव्यं २ सिद्धं २ वाधय २ विवाधय २ माचय २
विमाचय २ धय २ विधय २ संमनामाचय २ समनवस्मिय २ स्मिपवस्मि
नपविशुद्धी सर्वकथागतहृदयाधिष्ठिताधिष्ठितं ॐ मूड २ मरु मूड मरु मूडा म
रुयद ४ साहा ॥ ॥ न्याय उक्तीषविज्यानामभावरीसमापं ॥ ७८ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 मकल्लिभमय भगवान्वा
 टपर्वतमरुतल्लिकसंघन
 ननखलपूत ४ स मय नरु
 नामसमाधिं समापन्न ४ न

पावमिताये ॥ नवं मया धन
 ऊगृहविह्वलितस्म ॥ गृहक
 साहं मरुतावधिसंघन
 गवान्गंरीवायां न्रवराघं
 स्मिन्मय नार्या वलाकिन

१३

॥ शवाधिसत्त्वमहासत्त्वा ४ गंरीवायां प्रह्लापावमितायां चर्यामवं वा वलाकयतिस्म
 भयचत्त्वमहासत्त्वा वल्लुन्यां वा वलाकयतिस्म ॥ न्रथयुष्मात्तादिपूजावद्वानेतावनन
 र्यावलाकिन ॥ शवाधिसत्त्वमहासत्त्वमनदवाचन ॥ ॐ हायां वलाकिन ॥ १२ व
 लपूजावा ॥ कल्लइहिनावा ॥ गंरीवायां प्रह्लापावमितायां चर्यां वल्लुकाभनकथ
 वलाकयितव्यं ॥ ॥ न्रवलाकिन ॥ १३ न्राह ॥ ॥ य ४ खलपूत ४ कल्लपूजावा

कलद्रुहिनावागंगरीवायांप्रह्लापायमितायांवर्यावरुकाभनननेववत्तलाय
यितव्यांनपंशुन्यतेनंवनृपंनृपातपथकशुन्यकायातशुन्यंनवंवदनासंज्ञासं
स्कावाविहानानिशुन्यतात्रवंप्रिपूतसर्वधर्माशुन्याश्चलकदाश्चनन्य
नाश्चनिवृद्धाश्चवलाश्चिमलाश्चयथाश्चसंपूर्णाश्चनस्माद्रुहिभविष्यु
शुन्यकायातनृपंतवदतानसंज्ञातसस्कायातविहाननचक्रश्चनलभर्तनशु

शंनद्रिष्टाःनकायंनमनानृपातमदाःनगंधानवसाःनमुष्टयंगानध
मंनचक्रश्चनृवमृदयाननिवाधनमार्गंनहानंनप्राप्तिनाश्चनस्मात्कि
सारिपूतनृपाफित्वागवाधिसत्वापुह्लापायमितामाधिर्यश्चिह्ननिविचं
वृत्तानृनृनृवायांसम्यक्वाधोपयासातिकाकानिष्टानिवनिपाकाश्च
सुचव्यवस्थितांसर्ववृद्धपिपुह्लापायमितामाधिर्यनृनृवासंम्यक्वाधो

मलिसंवद्धाश्चतुर्हस्तान्वाङ्मात्रं प्रहाराय मितामं तु ४१ नृनृ ४२ मनु ४३ नृ स
मसमा मनु ४४ सवदुष्टय प्रसमना मनु ४५ सख मध्यात्वा गमा प्रहाराय मिताया
यूक्तामं तु ४६ तद्यथा ॐ गते गते पादंगते पादसंगते वा विल्लाहा नृवंसादिपु
तुगंती वायां प्रहाराय मितायां भिक्षु नृवाङ्मात्रं वाधिसत्त्वं नमहा सत्त्वं नमः ॥ थ
खलु गगनसमाधिव्यक्त्या गगनावलाकिन ४७ वायवाधिसत्त्वाय महा

[illegible]

रुगवति त्वां यं कुरु मना वथं पूजय सपदि वास्य सर्व सत्त्वानां च सर्व नथा गमाधि
 साधित्ति न स्वाहा ॥ उं स्वाहा ॥ कं स्वाहा ॥ ईं स्वाहा ॥ धीं स्वाहा ॥ ध्रु स्वाहा ॥ आदि ह्याय
 स्वाहा ॥ सोमाय स्वाहा ॥ अंगनाय स्वाहा ॥ वृक्षाय स्वाहा ॥ वृक्षस्य नीय स्वाहा ॥ शुक्राय स्वाहा
 ॥ अग्ने श्वनाय स्वाहा ॥ वाक्य स्वाहा ॥ कुरु स्वाहा ॥ वरुध वाय स्वाहा ॥ पमम वाय स्वाहा
 ॥ कुरुमा वाय स्वाहा ॥ सर्व यज्ञानां स्वाहा ॥ सर्व नरु ज्ञानां स्वाहा ॥ सर्वोपद्रवनां स्वाहा ॥ हा

२०

दक्ष वासिनां स्वाहा ॥ उं सर्वविश्वं ईं ईं रुद्र रुद्र स्वाहा ॥ इमं निवृत्त्या शिग्रहमाह्वानां
 भावदीपं प्रकाशितं कार्त्तिकमास शुक्लपक्ष सप्तमीमास च ४ यावनपीषधिकारुत्वा
 यावनवतुर्दंभीग्रहनक्षत्रमध्यपक्ष चित्वादि नदिन सप्तवावावचायितव्या ४ नक्षत्र
 पक्षमासी ज्ञात्वा वं पूजां कृत्वा ज्ञात्वा उवाच यत् ॥ नृस्य नवनदनिवर्षा सि मृ
 रुयं लविष्यति ॥ ज्ञात्वा ज्ञात्वा ज्ञात्वा ज्ञात्वा ज्ञात्वा ॥ सर्व यज्ञ इव श्रीर्न वव दास्यति

मञ्चयनसर्वग्रहानां साधनम्
नारुगवात्रिनि॥
बलीसमाप्य॥

वात्रिनि कृत्वा पुनं म्या नरि
मञ्चयनसर्वग्रहानां साधनम्

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ASHA ARCHIVES

आशा नरुवादे

398 I

ASHA ARCHIVES